

## सरदार पटेल राष्ट्रीय एकता का प्रतीक

\*अशोक टंडन

टाइम पत्रिका ने 27 जनवरी, 1947 के अपने अंक में 72-वर्षीय वयोवृद्ध कांग्रेस नेता वल्लभभाई पटेल को अपने मुख पृष्ठ पर स्थान दिया था।

पटेल के जीवन के सामाजिक-राजनीतिक पैमाने को लेकर तैयार हुई विस्तृत कहानी से इन अटकलों ने ज़ोर पकड़ना शुरू कर दिया कि भारत का प्रथम प्रधानमंत्री होने वाला व्यक्ति शायद "बारदोली का सरदार" होगा, जिन्हें ये नाम महात्मा गांधी ने उनके ब्रिटिश शासन की किसान विरोधी नीतियों का सफलतापूर्वक नेतृत्व करने के लिये प्रदान किया था। परंतु कुछ टिप्पणीकारों ने ठीक ही कहा था, सरदार पटेल का अपने समय का बेहतरीन प्रधानमंत्री होना शायद भारत की किस्मत में नहीं था, जो उसे कभी नहीं मिल पाया।

जाहिर तौर पर, महात्मा गांधी ने इस महत्वपूर्ण भूमिका के लिये जवाहरलाल नेहरू के अभिषेक का मन बना लिया था; अन्यथा, उन्होंने एक समय जब अंग्रेज़ भारत को छोड़ने की तैयारी कर रहे थे, सरदार पटेल को कांग्रेस अध्यक्ष के पद के लिये नेहरू के पक्ष में अपना नाम वापस लेने के लिये नहीं कहा होता।

कई इतिहासकार विश्वास करते हैं कि भारतीय संघ को एकजुट करने के लिये निर्णायक कार्रवाई करने और हैदराबाद के निज़ाम को भारत में विलय के लिये मज़बूर करने के लिये उनके विरुद्ध सीधी कार्रवाई का आदेश देने में "कठोर दृढ़-विश्वास और व्यावहारिकता" दर्शाने वाले भारत के लौह पुरुष की 1950 में उनकी मृत्यु के बाद, पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकारों से उनकी जयंती मनाये जाने को लेकर, बेहतर व्यवहार की अपेक्षा थी।

यहां तक कि भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा; राजेंद्र प्रसाद ने एक बार कहा था- "दिल्ली में मैमोरियल के निर्माण के लिये कोई प्रयास नहीं किया गया। यहां तक कि संसद भवन में लगा चित्र भी ग्वालियर के महाराजा से उपहार स्वरूप प्राप्त है। अतः हमें इस विचार से अलग नहीं हटना चाहिए कि उनकी (सरदार पटेल की) सेवाएं किसी से भी कम कीमती नहीं हैं क्योंकि हमने उन्हें सही पहचान नहीं दी है।"

सरदार पटेल को उनकी मृत्यु के 41 साल बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री पी वी नरसिम्हराव ने 1991 में भारतरत्न (सर्वोच्च नागरिक सम्मान) से सम्मानित किया था।

इस बार महान राष्ट्र ने सरदार पटेल को उनकी 140वीं जयंती, पहली बार राष्ट्रीय कार्यक्रमों की सूची में डालते हुए, एकता दिवस के रूप में आयोजित करके उन्हें याद किया, जिसे 2014 में सत्ता में आई नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार ने मनाने का फैसला किया और उनकी जयंती 31 अक्टूबर को हर वर्ष सरकारी तौर पर मनाई जायेगी।

प्रधानमंत्री मोदी ने हमेशा विश्वास प्रकट किया कि "सरदार पटेल के राष्ट्र को एकजुट करने के उनके अथक प्रयासों के लिये भारत सदैव उनका ऋणी रहेगा। सरदार पटेल को श्रद्धांजलि स्वरूप सरदार पटेल को समर्पित 182 मीटर (597 फुट) ऊंची एकता स्मारक की प्रतिमा का निर्माण गुजरात में वडोदरा के निकट नर्मदा बांध के सामने किया जा रहा है।

गुजरात सरकार लोगों के सहयोग से विश्व की सबसे लंबी लोहे की प्रतिमा का निर्माण कर रही है। दि स्टेच्यू ऑफ यूनिटी मूवमेंट ने रन फॉर यूनिटी नाम से एक मैराथन का आयोजन किया जिसमें भारत भर में लाखों लोगों ने भाग लिया।

सरदार पटेल, उनके समय के इतिहासकारों के अनुसार, उच्च नैतिक चरित्र के साथ मज़बूत प्रतिप्रतिबद्धता वाले व्यक्ति थे।

उनकी पत्नी झावेरबा का 1909 में कैंसर से देहांत हो गया जब वे मात्र 34 वर्ष के थे। सरदार पटेल ने अपनी पुत्री मणिबेन पटेल और पुत्र दयाभाई पटेल को लालन-पालन के लिये अपने परिवार के सदस्यों के पास छोड़ दिया और पुनर्विवाह करने की बजाए, कानून की पढ़ाई करने के लिये इंग्लैंड चले गये तथा अपनी कक्षा में सर्वोच्च स्थान हालिसक करते हुए 30 माह के तीन वर्षीय डिग्री पाठ्यक्रम को पूरा करके बैरिस्टर के तौर पर स्वदेश लौटे। वे 36-37 वर्ष की आयु में रोज़ाना 16 घण्टे की पढ़ाई करते थे।

सरदार पटेल पश्चिम से अत्यधिक प्रभावित एक बैरिस्टर और एक सुलझे हुए मध्यस्थ के तौर पर भारत लौटे थे। उन्होंने शीघ्र ही अहमदाबाद में एक उत्कृष्ट कानूनी प्रैक्टिस आरंभ कर दी। उनका उद्देश्य एक धनी व्यक्ति बनने का था। परंतु 1915 में अहमदाबाद में गुजरात क्लब में एक मौके पर महात्मा गांधी जी से उनकी पहली मुलाकात ने पटेल के जीवन में आमूलचूल परिवर्तन ला दिया और एक वर्ष के भीतर थ्री-पीस सूट को प्यार करने वाला एक स्टाइलिश बैरिस्टर धोती-कुर्ता पहनकर स्वतंत्रता सेनानी बन गया।

पटेल 1927 में अहमदाबाद के महापौर बने जहां एक प्रशासक के तौर पर उनका असाधारण कौशल गुजरात बाढ़ के दौरान दिखाई दिया। उन्होंने बाढ़ पीड़ितों को राहत के लिये धन जुटाने का एक अभूतपूर्व अभियान शुरू किया। पटेल ने शीघ्र ही अपने को कांग्रेस पार्टी के मुख्य संरक्षक के तौर पर स्थापित कर लिया। उन्होंने पार्टी के कोष की कमान संभाली परंतु व्यक्तिगत उद्देश्यों के लिये इसका कभी इस्तेमाल नहीं किया।

सरदार पटेल ने 1928 में महात्मा गांधी के बारदोली सत्याग्रह और 1930 में दांडी मार्च को सफल बनाने में अपने सांगठनिक कौशल का परिचय दिया। पटेल ने महात्मा गांधी के आह्वान पर 1942 में राष्ट्रव्यापी नागरिक अवज्ञा आंदोलन शुरू करने के लिये मुंबई में ग्वालिया टैंक ग्राउंड (अब अगस्त क्रांति मैदान) में ज़ोरदार भाषण किया।

पटेल ने गुजरात में सहकारिता आंदोलन का निर्देशन किया और कैरा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ की स्थापना करने में सहायता की, जिसने देश भर में डेरी फार्मिंग के लिये महत्वपूर्ण बदलाव लाने का काम किया। पटेल को महात्मा गांधी के करीबी 'मज़बूत व्यक्ति' और लोगों के मसीहा ज़मीनी स्तर के पार्टी नेता और एक धरती के सच्चे लाल के तौर पर जाना जाता था।

सरदार, एक विशिष्ट विद्वान और संविधान सभा के प्रमुख सदस्य भी थे और संविधान के बहुत से प्रावधान, विशेषकर मौलिक अधिकारों से संबंधित प्रावधानों के लिये उनकी स्वीकृति को मोहर लगी। सरदार पटेल के कहने पर ही महात्मा गांधी ने डॉ बी आर आम्बेडकर और डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसे मज़बूत व्यक्तियों को केंद्रीय मंत्रिमंडल में जगह दिये जाने को लेकर अनिच्छुक नेहरू को राजी किया।

डा श्यामा प्रसाद मुखर्जी, जिन्होंने बाद में भारतीय जन संघ की स्थापना की थी, सरदार पटेल को "भारत की आज़ादी का सबसे बहादुर चैंपियन और हमारे राष्ट्रीय जीवन में सबसे मज़बूत एकीकरण शक्ति" कहा था। डॉ मुखर्जी के अनुसार सरदार पटेल ताकत और उदारता के आदर्शवाद का एक दुर्लभ संयोग थे, जिसे उन्हें एक ऐसा नेता और देशभक्त बना दिया जिसकी कोई बराबरी नहीं थी।

केंद्रीय गृह मंत्री और उप प्रधानमंत्री के तौर पर पटेल व्यावहारिक कुशाग्रबुद्धि वाले एकता के मसीहा के तौर पर उभरे और 565 रियासतों के भारतीय गणराज्य में विलय करने का चिरस्मरणीय कार्य संपन्न किया। पटेल को आधुनिक संयुक्त भारतीय प्रशासनिक सेवा और अन्य अखिल भारतीय सेवाओं की स्थापना के लिये स्नेह के साथ "भारतीय सिविल सेवकों के संरक्षक" के तौर पर भी याद किया जाता है।

जम्मू कश्मीर के मुद्दे पर, सरदार पटेल ने स्पष्ट घोषणा की थी- "मैं एक बात स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि हम किसी को भी कश्मीर की एक ईंच भूमि का भी परित्याग नहीं करेंगे" पटेल को कांग्रेस और अनुशासन के वास्तविक सरदार के तौर पर जाना जाता है। जब उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री पं० गोविंद वल्लभ पंत के खिलाफ विद्रोही स्वर उठे तो सरदार पटेल ने इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति से निपटने का ज़िम्मा भी खुद संभाला।

पटेल ने लखनऊ में विधान सभा हाल में कांग्रेस विधायक दल की बैठक बुलाई और कहा कि सभी निकास बिंदुओं को पूरी तरह खोल दिया जाये तथा गंभीर लहज़े में कहा "जो जाना चाहते हैं वे जाने के लिये स्वतंत्र हैं"। उन्होंने पुनः कहा "मैंने कहा है जो छोड़कर जाना चाहते हैं वे जाने के लिये स्वतंत्र हैं"; और इसी बात को तीसरी बार दोहराया। हाल में सन्नाटा छा गया और कोई भी अपनी सीट से नहीं हिला। इसके बाद पटेल ने सभी दरवाजे बंद करने के लिये

कहा और कांग्रेस विधायकों से पंडित पंत जैसे समर्पित कांग्रेस जन और एक महान स्वतंत्रता सेनानी के खिलाफ विद्रोह के सूरों पर लगाम लगाने के लिये कहा। ये था सरकार पटेल का पार्टी के अंदरूनी विद्रोह से निपटने का तरीका।

इतिहासकारों को विश्वास है कि पटेल की प्रमुख उपलब्धियों में से एक विभिन्न जातियों और समुदायों के बीच सामंजस्य और विश्वास का निर्माण करना था जो सामाजिक-आर्थिक रेखाओं में बंटे थे। सरदार पटेल ने जनता के विश्वास के साथ सौराष्ट्र में प्राचीन सोमनाथ मंदिर के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

परंतु राम मंदिर- बाबरी मस्जिद मुद्दे पर पटेल ने 1949 में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री गोविंद वल्लभ पंत को लिखा था, "मैं महसूस करता हूं कि ये एक ऐसा मुद्दा है जिसे दो समुदायों के बीच परस्पर सहिष्णुता और सदभाव के साथ हल किया जाना चाहिये"... यदि हम मुस्लिम समुदाय की उदयत सहमति ले लेते हैं तो ऐसे मामलों को शांतिपूर्वक हल किया जा सकता है। ऐसे विवादों को बलपूर्वक हल करने का कोई सवाल ही नहीं हो सकता"

स्वतंत्र के उपरांत प्रेस के विकास और समेकन में सरदार पटेल की भूमिका के बारे में बहुत कम जानकारी है। नेहरू मंत्रिमंडल में प्रथम सूचना एवं प्रसारण मंत्री के तौर पर सरदार पटेल ने स्वतंत्र भारत में समाचारपत्रों को अंतर्राष्ट्रीय समाचारों की आपूर्ति के लिये भारत की अग्रणी समाचार एजेंसी प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया के साथ एक औचित्यपूर्ण साझेदारी समझौता करने के लिये ब्रिटिश इंटरनेशनल न्यूज एजेंसी रायटर्स को निकट लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अंततः जब रायटर्स ने शर्तों को स्वीकार कर लिया और 21 दिसंबर 1948 को एक समझौते की घोषणा की गई, पीटीआई को रायटर्स के शेयर्स खरीदने के लिये तेज़ी से निधियां जुटानी पड़ीं। पीटीआई ने प्रत्येक 100 रु मूल्य के 10,000 डिबेंचर जारी किये और सरदार पटेल ने बड़ौदा के शासक को डिबेंचर्स का एक बड़ा हिस्सा खरीदने के लिये राजी करने में मदद की। इस प्रकार पीटीआई ने धनराशि जमा कराई और रायटर्स की साझेदार बन गई।

सरदार स्वतंत्रता के बाद भारत की तकदीर को आगे मूर्त रूप देने के लिये अधिक समय तक जीवित नहीं रहे। उनके देहांत पर दुनिया भर से प्राप्त संवेदना संदेशों की एक प्रमुख विशेषता यह रही कि पूर्ववर्ती रियासतों के शासकों ने भी, जिनका सरदार पटेल ने भारतीय संघ में विलय कर दिया था, भारत के इस महान सपूत को सम्मानपूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित की। ब्रिटिश सेवा नियमों से प्रस्थान पर, आई सी एस और आई ए एस के सदस्य राजधानी में एकत्र हुए और संयुक्त अखिल भारतीय सेवाएं शुरू करने वाले इस व्यक्ति को सहानुभूति और स्नेह से परिपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये एक शोक प्रस्ताव पारित किया।

(श्री अशोक टंडन एक वरिष्ठ पत्रकार और प्रसार भारती बोर्डके अंश-कालिक सदस्य हैं।  
उनके द्वारा व्यक्त किये गये विचार उनके अपने हैं)

\*\*\*\*\*

## Sardar Patel – An Embodiment of National Unity

\*Ashok Tandon

In its January 27, 1947 issue, *Time* Magazine featured 72-year old veteran Congress leader Vallabhbhai Patel on its cover page.

The comprehensive story on the socio-political dimensions of Patel's life led to speculation that perhaps the person taking over as the first prime minister of independent India would be the "Sardar of Bardoli", a title given to him by Mahatma Gandhi for successfully championing the cause of the peasants in Gujarat against anti-farmers policies of the British Raj. But, as aptly put by some commentators, Sardar Patel was destined to be the finest prime minister of his time that India never had.

Apparently, Mahatma Gandhi had made up his mind to anoint Jawaharlal Nehru for the coveted role; otherwise, he would not have asked Patel to withdraw in favour of Nehru for the post of Congress President at a time when the British were preparing to leave India.

Many historians believe that the *Iron Man of India*, whose "steely determination and pragmatism" in taking decisive action to consolidate the Indian Union and ordering direct police action against the Nizam of Hyderabad forcing him to merge his state into India, deserved a better treatment from the successive Congress governments in commemorating his birth anniversary since his death in 1950.

Even India's first President Dr. Rajendra Prasad at one stage said - *"No attempt has been made in Delhi to erect a memorial. Even the portrait in the Parliament House is the gift from the Prince of Gwalior. Let us not, therefore, run away with the thought that his (Sardar Patel's) services are any the less valuable because we choose not to recognize them."*

Patel was awarded *Bharat Ratna* (highest civil decoration) in 1991, forty one years after his death, by the then Prime Minister P.V. Narasimha Rao.

Today a grateful nation is commemorating Sardar Patel's 140<sup>th</sup> birth anniversary as the Rashtriya Ekta Divas (National Unity Day), introduced for the first time in the calendar of national events by the Narendra Modi's BJP-led NDA government in 2014, to be officially held annually on his birth anniversary, 31 October.

Prime Minister Modi has always believed that "India will forever be indebted to Sardar Patel for his tireless efforts to unite the Nation," In a befitting tribute to Sardar Patel, 182 metres (597 feet) high **Statue of Unity** monument dedicated to Sardar Patel is being constructed facing the Narmada Dam near Vadodara in Gujarat.

The world's tallest iron statue is being built by the Gujarat Government with people's participation. The Statue of Unity Movement organized a marathon entitled *Run for Unity* in which millions of people participated at several places throughout India.

Sardar Patel, according to his contemporary historians, was a man of strong convictions with high moral character.

His wife Jhaverba died of cancer in 1909 when he was just 34. Leaving his daughter Maniben Patel and son Dahyabhai Patel to his family members for their upbringing, Patel, instead of marrying again, went to England to study Law and returned as a Barrister finishing a three-year degree course in 30 months as a topper in his class. He used to study 16 hours a day at the age of 36-37.

Sardar Patel returned to India as a highly westernised barrister and a keen bridge player. He soon set up a flourishing law practice in Ahmedabad and aimed to be a rich man. But his first meeting with Mahatma Gandhi, a chance encounter at the Gujarat Club in Ahmedabad in 1915,

changed the entire course of Patel's life and within a year the three-piece suit loving stylish barrister turned into a Khadi Dhoti-Kurta clad freedom fighter.

Patel became the mayor of Ahmedabad in 1927 where his extraordinary skill as an administrator was on display during the Gujarat floods. He initiated an unprecedented fund-raising drive for the relief of the flood victims. Patel soon established himself as Congress Party's chief organiser. He handled party funds but never used them for personal purposes.

Sardar Patel demonstrated his organizing skills in making a success of Mahatma Gandhi's Bardoli Satyagraha in 1928 and the Dandi March in 1930. Patel was at his persuasive best when he spoke at the Gwalia Tank ground (now called August Kranti Maidan) in Mumbai to launch the nation-wide civil disobedience movement in 1942 at the behest of Mahatma Gandhi.

Patel guided the cooperative movements in Gujarat and helped in setting up of the Kaira District Cooperative Milk Producers' Union which proved to be a game changer for the dairy farming throughout the country. Patel came to be known as the "muscle man " of Mahatma Gandhi and a genuine grass root level party leader with mass appeal and as a true son of the soil.

The Sardar was also an exceptional scholar and a prominent member of the Constituent Assembly and several provisions of the constitution, especially relating to the Fundamental Rights, carried his stamp of approval. It was at Sardar Patel's insistence that Mahatma Gandhi persuaded a reluctant Nehru to induct stalwarts like Dr. B. R. Ambedkar and Dr. Syama Prasad Mookerjee into the Union Cabinet.

Dr. Syama Prasad Mookerjee, who later formed Bharatiya Jana Sangh, described Sardar Patel as "*the most valiant champion of India's freedom and the strongest unifying force in our national life.*" According to Dr. Mookerjee, Sardar Patel was "*a rare combination of idealism and realism, of strength and generosity which made him a leader and a statesman who had no equal.*"

As the Union Home Minister and the Deputy Prime Minister, Patel emerged as a statesman of integrity with practical acumen and resolve to accomplish the monumental task of integrating 565 princely states to merge into the independent Indian Republic. Patel is also affectionately remembered as the "*Patron saint of India's civil servants*" for having established the modern unified Indian Administrative Service and other all India services.

On the issue of Jammu & Kashmir, Sardar Patel was unequivocal in declaring: "*I should like to make one thing clear, that we shall not surrender an inch of Kashmir territory to anybody.*" Sardar Patel was perceived as the real boss of the Congress and a disciplinarian. When dissidence erupted against the then Uttar Pradesh Chief Minister Pt. Govind Vallabh Pant, It was Sardar Patel who took upon himself the arduous task of handling this unfortunate development.

Patel convened a meeting of the Congress Legislature Party in the Vidhan Sabha hall in Lucknow and asked for all the exit points to be thrown wide open and said in a commanding tone "those who want to leave are free to go". He again said "I say those who want to leave are free to go" and repeated the same for the third time. There was a pin drop silence and no one moved from his/her seat. Patel then asked all the doors to be shut and gave the Congress legislators a dressing down for plotting dissidence against a great freedom fighter and a dedicated congressman like Pt. Pant. That was Sardar Patel's style of tackling internal party dissidence.

Historians believe that one of Patel's key achievements was the building of cohesion and trust amongst the different castes and communities which were divided on socio-economic lines. Sardar Patel played a pivotal role in the reconstruction of the ancient Somnath Temple in Saurashtra through a public trust.

But on the Ram Mandir-Babri Masjid issue, Patel wrote to UP Chief Minister Govind Vallabh Pant in 1949, "I feel that the issue is one which should be resolved amicably in a spirit of mutual toleration and goodwill between the two communities. . . . such matters can only be resolved peacefully if we take the willing consent of the Muslim community with us. There can be no question of resolving such disputes by force."

Very little is known about Sardar Patel's role in the growth and consolidation of the Press after independence. As the first Information & Broadcasting Minister in the Nehru cabinet, Sardar Patel played a key role in bringing round the British transnational News Agency Reuters to enter into a reasonable partnership agreement with the Indian premier news agency the Press Trust of India for supply of international news to the newspapers in free India.

Eventually, when the terms were accepted by Reuters and an agreement was announced on 21 September 1948, PTI had to raise funds quickly for buying the shares of Reuters. PTI issued 10,000 debentures of Rs. 100 each and Sardar Patel helped by persuading the ruler of Baroda to buy a large portion of the debentures. That was how PTI remitted the money and became a partner of Reuters.

Sardar Patel did not live long after independence to further shape India's destiny. One unique feature of the condolences which poured from all over the world on his demise was that even the erstwhile rulers of the princely state which Patel merged into the Indian Union paid their respectful homage to the great son of India. In a departure from the British service rules, member of the I.C.S and the I.A.S assembled in the capital and passed a condolence resolution paying glowing and affectionate tributes to the man who launched the unified All India Services.

*(Shri Ashok Tandon is a senior journalist and a part-time member of the Prasar Bharati Board. Views expressed here are his personal view.)*

\*\*\*\*\*

(PIB Features)